ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति जिन महानुभावों तथा आत्मीयजनों की प्रेरणा एवं सहायता से हुई है, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं केवल औपचारिकता न समझकर अपना आद्य एवं परम् कर्तव्य मानती हूँ।

यह लघु शोध-प्रबंध श्रद्धेय एवं पूजनीय गुरुवर्य डॉ. सुलोचना अंतरेड्डी जी, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, डी. आर. माने महाविद्यालय, कागल, जिला - कोल्हापुर के आत्मीय सहयोग, निरंतर प्रेरणा आदि के साथ अपने कुशल एवं अमूल्य निर्देशन के फलस्वरूप ही प्रस्तुत हो सका है। आपने अत्याधिक व्यस्तताओं के बावजूद भी मेरे लिए पर्याप्त समय दिया तथा मेरी जिज्ञासाओं को भी आत्मीयता से परितुष्ट किया, जिसका मधुर फल यह लघु शोध-प्रबंध है। साथ ही आपने अपने मौलिक विचारों से एवं लिखित साहित्य से मुझे जीने की नई कला भी सिखाई है। आपका आदर्श, प्रसन्न एवं प्रभावी व्यक्तिमत्व मुझे सदैव प्रेरित करता रहा है। आप जैसी गुरुवर्या जी को शब्दों के फूलों में बाँधना मेरे लिए कठिन ही नहीं बल्कि असंभव बात हो जाती है। फिर भी मैं आप तथा आपके परिवार के प्रति आभार की केवल औपचारिकता न निभाते हुए सहृदय से कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। गुरुवर्या डॉ. अंतरेड्डी जी के पति डॉ. प्राचार्य वसंत हेळावी जी के आशीर्वाद मेरे इस कार्य में प्रेरक सिद्ध हुए हैं। उनके सुपुत्र चि. सौरभ का सहयोग भी अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त हुआ है। उनकी माताजी अकम्मादेवी के आशीर्वाद से मेरा लघु शोध-कार्य संपन्न हुआ है। मैं भगवान से यह दरख्वास्त करती हूँ कि भविष्य में भी आपके शुभ आशीष तथा कुशल पथ-प्रदर्शन का आजीवन हकदार बनने की क्षमता प्राप्त हो।

मेरे जीवन में आलोक प्रदान करनेवाले मेरे जीवन-साथी, मेरे पति श्री. निलेश स्वामी जी ने मुझे इस लघु शोध-कार्य में अनमोल सहयोग दिया है। जब कभी मेरे मन में शोध-कार्य के प्रति कुछ कारणवश उदासीनता अथवा निराशा छा जाती तब उन्होने धीरज बाँधकर मेरे लघु शोध-कार्य को गति देने का प्रयास किया है। जीवन के हर क्षण, हर पल में मुझे उनका अटूट तथा असीम सहयोग प्राप्त हुआ है। उनके सहयोग के बिना यह लघु शोध-प्रबंध पूरा होना असंभव ही था। उनके प्रति शब्दों की अपेक्षा हृदय से ही चिर-ऋणी रहना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। मेरा बेटा चि. ऋषिकेश तथा बेटी ऋतुजा ने मेरे अध्ययन काल में जो सहनशीलता दिखाई है वह निःसंदेह प्रशंसनीय है।

आदरणीय एवं श्रद्धेय, परमात्मा स्वरूप माता-पिता श्री. जनार्दन अपय्या स्वामी तथा माता सौ. उमा जनार्दन स्वामी के आशीर्वाद से मेरा लघु शोध-प्रबंध कार्य संपन्न हुआ है। साथ ही मेरे भाई प्रशांत और कुमार, बहन शोभा तथा चाचा-चाची, बड़े भाई-भाभी और मेरी सास आदि स्नेहजनों की प्रेरणा एवं असीम वात्सल्य तथा विश्वास का ही यह परिणाम है कि मैं अपना कार्य पूर्ण कर सकी। अतः मैं हृदय से उनके प्रति आभार प्रदर्शित करती हूँ।

मेरे परमपूज्य चाचाजी (आण्णा-बापू) और ससूर जी (आण्णा) जो अपनी सेवा करने का अवसर दिए बिना हम सबको छोड़कर इस दुनिया से चले गए, जिनके आशीर्वाद से परिश्रमपूर्वक संकटों का सामना करके हम जीवन में आगे बढ़ रहे हैं। आपके चरणों में मेरा यह संकल्प अर्पित है।

श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण, प्रा. तानाजी स्वामी, कन्या महाविद्यालय के व्यवस्थापन मंडल के अध्यक्ष श्री. चंद्रशेखर मराठे तथा प्राचार्य राजू झाडबुके, प्रा. सुनिता तळाशीकर आदि द्वारा मिले सहयोग एवं परामर्श से भी मैं काफी लाभान्वित हुई हूँ। अतः इन सभी के प्रति कृतज्ञ हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध पूर्ति में मेरी सहेलियों का भी परोक्ष-अपरोक्ष सहयोग प्राप्त हुआ है। अतः इन सभी आत्मीयजनों के प्रति मैं तहे दिल से कृतज्ञ हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक सामग्री संकलन मुझे बैरिस्टर बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, कन्या महाविद्यालय, मिरज और बायसिंगर मेमोरिएबल लायब्ररी, मिरज से प्राप्त हुई। कन्या महाविद्यालय की ग्रंथपाल सुप्रिया मोरे तथा श्री बोमाणे तथा कर्मचारियों के प्रति दिल से कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का टंकण प्रभावी, आकर्षक, सुचारू एवं कलात्मक रूप से संपन्न करनेवाले श्री. अल्ताफ मोमीन के प्रति भी हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ।

अंत में मैं उन सभी के प्रति आभार प्रकट करना अपना परम-कर्तव्य समझती हूँ, जिन्होने मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य को पूरा करने के लिए प्रेरणा, प्रोत्साहन और सहायता की है। भविष्य में भी इन सब से सहयोग तथा आशीर्वाद की कामना करते हुए मैं अपना यह लघु शोध-प्रबंध विद्वानों के सम्मुख परीक्षणार्थ विनम्रता से प्रस्तुत करती हूँ।

शोध-छात्रा

स्थान :

तिथि :

(सु. श्री.उषा जनार्दन स्वामी)